पठन स्तर ४

हम उन्हें बा कहते हैं

Author: Subhadra Sen Gupta
Illustrator: Neeta Gangopadhya
Translator: Madhu B. Joshi

महात्मा गाँधी के बहुत से फ़ोटो में हम उन्हें उनके पीछे बैठे हुए देखते हैं। खादी की साड़ी पहने और पल्लू से सिर ढँके, नाज़ुक नाक नक्श वाली एक साधारण सी स्त्री। उन्हें जानने वाले याद करते हैं कि वे चुपचाप बैठी रहतीं, शायद ही कभी कुछ कहती हों, लेकिन आप उनका चेहरा नहीं भूल सकते थे।

वह कस्तूरबा थीं, मोहनदास करमचन्द गाँधी की पत्नी।

वह न तो पढ़ी-लिखी थीं और न ही परिष्कृत लेकिन वह मज़बूत व्यक्तित्व की धनी थीं और लोग उनकी सरलता और सहृदयता के कारण उन्हें पसन्द करते थे। वह एक पत्नी, माँ, दादी-नानी, दोस्त और स्वतन्त्रता सेनानी थीं।

ब्रिटिश कर्मचारी उनको 'मैडम गाँधी' कहकर पुकारते लेकिन भारतीयों के लिए वह 'बा' थीं, उनकी अपनी माँ। यहाँ तक कि गाँधी जी भी उन्हें बा ही कहते थे!

और स्वतन्त्रता संग्राम, विरोध प्रदर्शनों, सत्याग्रहों और उपवासों के हंगामों के बीच वह उन्हें टिकाए रखने वाला लंगर थीं। वह उनके संसार का केन्द्र बिन्दु थीं और उनके सहयोग के बिना शायद गाँधी जी इतना ज़्यादा हासिल नहीं कर पाते।

और वह अपनी ख़ुद की पहचान रखने वाली स्त्री भी थीं। वह मज़बूत, साहसी, और व्यवहारिक थीं और गाँधी जी की तरह उन्होंने भी अपने देश के लिए बहुत कष्ट झेले और बलिदान किए। वह स्वतन्त्रता सेनानी बनीं, विरोध प्रदर्शनों की अगुवाई की, पुलिस की लाठियाँ खाईं और जेल गईं। वह गाँधी जी का साबरमती आश्रम भी चलाती थीं और वहाँ स्वतन्त्रता संग्राम के सभी नेताओं का आतिथ्य निर्वाह करती थीं। नौजवान हों या बूढ़े, सभी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की वह सहृदय दोस्त थीं।

कस्तूरबा सभी के लिए 'बा' या माँ थीं जैसे गाँधी जी 'बापू' या पिता थे। क्या शानदार जोड़ी थी!

साबरमती आश्रम में

साबरमती आश्रम में कस्तूरबा और गाँधी जी बच्चों से घिरे रहते थे जिनको वे वानर सेना या 'मंकी आर्मी' कहते थे।
गाँधी जी उन्हें सब्ज़ियाँ बोना, गायों और बकरियों की देखभाल करना और चरखे पर सूत कातना सिखाते थे। एक दिन यह देखने के लिए कि कौन ज़्यादा सूत कातता है, चरखा प्रतियोगिता हुई। और कस्तूरबा और गाँधी जी अपनी एक पोती से हार गए।

गाँधी जी ने एक दिन बच्चों से कहा कि तुम लोग कस्तूरबा का कहना वैसे ही माना करो जैसे मैं मानता हूँ क्योंकि मैं तो उनसे बहुत डरता हूँ! एक दिन, जब सबने दोपहर का खाना खा लिया तो कस्तूरबा आराम करने चली गईं। तभी कुछ मेहमान आ गए। गाँधी जी उनको भोजन कराना चाहते थे, बिना कस्तूरबा की नींद में खलल डाले। इसलिए उन्होंने बच्चों से कहा कि बहुत चुपचाप खाना बना लें और इस बात का ध्यान रखें कि कस्तूरबा की नींद न टूटे। लेकिन कुछ ही देर में आफ़त हो गई- एक बच्चे से झन्न से पीतल की थाली छूट गई!

कस्तूरबा उठ बैठीं और पूछने लगीं कि उन्हें क्यों नहीं जगाया गया। बापू का यह सोचना कि वे बा के गुस्से से बच जाएँगे, उनकी गलतफ़हमी थी क्योंकि वह तो उनकी प्रार्थना सभा में जा पहुँचीं और सबके सामने उन्हें डाँटा।

बालिका वधू

कस्तूरबा माखनजी का जन्म 11 अप्रैल 1869 को गुजरात के पोरबन्दर में हुआ था। उनके पिता का नाम गोकुलदास माखनजी और माता का नाम वेराज कुंवर बा था। हम उनके बचपन के बारे में बहुत कम ही जानते हैं लेकिन उनके पिता एक समृद्ध व्यापारी थे, इसलिए उनका लालन-पालन सुखी-सम्पन्न घर में हुआ। करमचन्द गाँधी गोकुलदास के अच्छे दोस्त थे, दोनों दोस्तों ने तय किया कि कस्तूरबा की सगाई करमचन्द के सबसे छोटे बेटे मोहनदास के साथ हो जाए।

सगाई के समय लड़का और लड़की दोनों की उम्र सात वर्ष थी! मोहनदास का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था और वह अपनी पत्नी से कुछ महीने छोटे थे। और कस्तूरबा जो शुरू से ही चुस्त और स्वावलम्बी थीं, उन्हें यह बात कभी भूलने नहीं देती थीं।

1882 में जब कस्तूरबा और मोहनदास 13 साल के हो गए तब उनकी शादी हुई और वह गाँधी परिवार में आ गईं। करमचन्द पोरबन्दर के राजा के दीवान यानी प्रधानमन्त्री थे। कस्तूरबा का ससुराल सम्पन्न था। यह एक संयुक्त परिवार था जिसके मुखिया करमचन्द और उनकी पत्नी पुतलीबाई थे। पुतलीबाई धार्मिक स्वभाव की बहुत सौम्य और दयालु महिला थीं जो अपने छोटे बेटे को बहुत चाहती थीं।

मोहनदास स्कूल जाते थे। उन दिनों लड़कियों को बहुत कम ही पढ़ाया जाता था। कस्तूरबा लिखना-पढ़ना नहीं जानती थीं और न ही उनकी इसमें रुचि थी। मोहनदास ने उन्हें पढ़ाने की बहुत कोशिश की और कस्तूरबा ने गुजराती में लिखना-पढ़ना सीख भी लिया लेकिन अंग्रेज़ी सीखने से उन्होंने साफ़ मना कर दिया। सच तो यह है कि जब दोनों 70 पार की उम्र में आग़ा ख़ाँ महल में दो वर्ष की कैद काट रहे थे तब भी गाँधी जी उन्हें भूगोल पढ़ाने की कोशिश कर रहे थे और वह उनकी बात ही नहीं सुनती थीं।

आगे जाकर मोहनदास एक दिन महात्मा गाँधी बने, स्वतन्त्रता सेनानियों के बहादुर नेता, लेकिन 13 साल की उम्र में वह बहुत बहादुर नहीं थे।

वह बहुत शर्मीले, अँधेरे में सोने से, साँप और भूतों से डरने वाले थे। उधर कस्तूरबा किसी से नहीं डरती थीं, अपने बालक पति से भी नहीं जो उन पर रौब गाँठने की पूरी कोशिश करता था। मोहनदास ने तय किया कि कस्तूरबा अपनी सहेलियों के साथ खेलने या मन्दिर जाने से पहले उनसे अनुमति लें। कस्तूरबा उनके आदेश की अनसुनी करतीं और जो उनका जी चाहता वही करती थीं।

असल में तो जीवनभर वह अपने प्रख्यात पति का मुकाबला करती रहीं जो ख़ासे हुक्मचलाऊ हो उठते थे। वह होंठ सिए, झगड़े में उलझने से इन्कार करती, डटी रहतीं। गाँधी जी ने कहा था कि उन्होंने सत्याग्रह का पहला पाठ अपनी मज़बूत इच्छाशक्ति वाली पत्नी से सीखा। सत्याग्रह और अहिंसा हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलन के मुख्य आधार रहे हैं। सत्याग्रह सच्चाई और आज़ादी की लड़ाई है और यह हमें अहिंसा यानी हिंसा किए बिना प्राप्त करनी थी। उन्होंने कहा, ”उसने अन्त में मुझे ख़ुद पर शर्मिन्दा कर दिया और मुझे मेरी उस मूर्खताभरी सोच से छुटकारा दिला दिया कि मैं उस पर राज करने के लिए पैदा हुआ हूँ; और आख़िर में वह मेरी अहिंसा गुरू बन गई।”

1886 में, जब वह 17 बरस की थीं, उनके पुत्र हरिलाल का जन्म हुआ। उसके बाद जल्दी ही मोहनदास कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड चले गए और पाँच साल बाद वापस आए। लौटकर उन्होंने राजकोट में वक़ालत शुरू कर दी जहाँ 1892 में उनके दूसरे बेटे मणिलाल पैदा हुए। युवा वक़ील मोहनदास का काम अच्छा नहीं चल रहा था क्योंकि जज के सामने जिरह करते वह इतने शरमा और घबरा जाते कि उनके मुँह से आवाज़ ही न निकलती! सौभाग्य से 1893 में उनको दक्षिण अफ्रीका से नौकरी का बुलावा आया और एक बार फिर अपने परिवार को छोड़कर वह डरबन चले गए। अपने परिवार को साथ ले जाने के लिए वह तीन साल बाद ही लौट सके।

27 साल की उम्र में दो बेटों की माँ कस्तूरबा ने बम्बई से एक अनजानी जगह के लिए पानी का जहाज़ पकड़ा। उन्होंने सोचा होगा कि वह जल्दी ही भारत आ जाएँगी लेकिन वापस लौटने में 18 साल लग गए। दक्षिण अफ्रीका में बीते यह बरस बहुत खुशी से भरे और बहुत संघर्ष और त्याग के भी थे। उन्होंने ख़ुद में बहुत बदलाव किए और स्वतन्त्रता सेनानी बनीं।

आहार सम्बन्धी प्रयोग और उपवास

खाना खाने के मामले में गाँधी जी बहुत मीनमेखी थे कि क्या खाएँ और क्या न खाएँ। वे आहार को लेकर बहुत प्रयोग करते थे। वे शाकाहारी थे और आमतौर पर चपाती, सब्ज़ियाँ, दाल और बहुत सारे फल और मेवे खाते थे लेकिन प्रयोग भी चलते ही रहते।

किसी दिन वे स़िर्फ मेवे ही खाना शुरू करते तो किसी दिन बिना तेल और मसालों के खाना पकाने को कहते और अपनी रोटियाँ नीम और लहसुन की बेस्वाद चटनी के साथ खाना चाहते। यह कस्तूरबा के लिए, जो साबरमती आश्रम में रसोई की देखभाल करती थीं, भारी सिरदर्दी की बात होती।

एक दिन उन्होंने बिना पकाया हुआ भोजन खाना तय किया क्योंकि ऐसा करने से महिलाओं को लम्बे समय तक रसोई में काम नहीं करना पड़ेगा। तो गाँधी जी और उनके अनुयायियों ने कच्ची सब्ज़ियाँ और फल खाने शुरू किए। उनके खाने में मूँगफली की चटनी और शहद में सने अंकुरित गेंहूँ, पालक और किशमिश शामिल थे और वे नीम्बू का रस और नारियल पानी पीते। और यह सब बेचारी कस्तूरबा ही बनातीं। कुछ दिन बाद ही सब बहुत कमज़ोर हो गए, आँव के रोग से ग्रसित होने लगे। तब जाकर प्रयोग का अन्त हुआ और कस्तूरबा ने चैन की साँस ली।

जब गाँधी जी उपवास रखते तो कस्तूरबा काफ़ी चिन्तित रहतीं और उनसे उपवास न करने की मिन्नत करतीं। फिर उन्होंने तय किया कि मुझे गाय का दूध नहीं पीना है। एक बार वे बहुत बीमार पड़े, डॉक्टरों ने उनको दूध पीने को कहा लेकिन उन्होंने मना कर दिया और किसी की बात नहीं मानी। आख़िर कस्तूरबा ने उनको बकरी का दूध पीने के लिए राज़ी किया। गाँधी जी ने अपने आहार में नमक भी त्याग दिया। जब वे नमक के लिए दांडी कूच पर निकले होंगे तो कस्तूरबा ज़रूर मुस्कराई होंगी!

कस्तूरबा अपने पति के आहार के नियमों को ख़ुद पर लागू नहीं करती थीं। गाँधी जी लोगों को चाय या कॉफ़ी पीने के लिए मना करते थे परन्तु वह दोनों ही चीज़ें पसन्द करती थीं। एक बार गाँधी जी ने स्वीकार किया कि “बा मेरे साथ रहते हुए भी चाय पीती हैं। वह कॉफ़ी भी पीती हैं। मैं प्रेम से उनके लिए यह बना सकता हूँ।”

बेगाने देश में

डरबन, दक्षिण अफ्रीका। अब तक अपने परिवार के साथ एक भद्र, सुरक्षित जीवन जी रही युवा कस्तूरबा के लिए यह बड़ा ही डरावना और बेगाना संसार था। दक्षिण अफ्रीका में समाज बहुत बँटा हुआ था। देश में गोरी चमड़ी वाले लोगों का राज था जो अफ्रीकी और भारतीय लोगों को नौकरों के स्तर पर रखते थे। अफ्रीकी लोग वहाँ के मूल निवासी थे और भारतीय वहाँ खेतों में काम करने गए थे। वहाँ अफ्रीकी लोगों की जनसंख्या ज़्यादा थी लेकिन उनको और भारतीयों को कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे।

यह गोरी चमड़ी वालों का संसार था जहाँ अफ्रीकी और भारतीय लोगों को ज़रा सी गलती पर बिना किसी जाँच के जेलों में बन्द कर दिया जाता था। वहाँ एक रंग-भेद वाला कानून अपारथाइड चलता था जिसके कारण अफ्रीकी और भारतीय लोग न आज़ादी से घूम सकते थे और न ही सम्पत्ति के मालिक हो सकते थे। उनके बहुत सी जगहों जैसे होटलों, दुकानों और अस्पतालों में प्रवेश करने की मनाही थी। यहाँ तक कि उनके लिए पानी पीने के नल भी अलग थे। यदि कोई गोरी चमड़ी वाला सामने से आ रहा हो तो उनको फ़ुटपाथ छोड़ सड़क पर उतरना पड़ता। एक बार ऐसा न करने पर गाँधी जी को मार खानी पड़ी थी।

गाँधी जी को इस बात का बहुत दुख हुआ क्योंकि उनके साथ चमड़ी के रंग को लेकर इतना भेदभाव तो इंग्लैण्ड में भी नहीं हुआ था। जल्दी ही उन्होंने उन भारतीय मज़दूरों की सहायता करनी शुरू की जिन्हें खेतों में काम करने का उचित मेहनताना नहीं मिलता था और मालिक लोग उन्हें पीटते भी थे। उन्होंने अदालत में उनके मुकदमें लड़े और बहुतों को बंधुआ मज़दूरी से मुक्त कराया। वह उन मज़दूरों के बीच बहुत लोकप्रिय हो गए जिन्हें “कुली” कहा जाता था और इस तरह वे “कुली बैरिस्टर” कहलाने लगे।

जब गाँधी जी अपना परिवार लेने भारत आए तो उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में जो देखा उसके बारे में लिखा और अमानवीय रंग-भेद कानून के बारे में भाषण दिया। उनका यह भाषण दक्षिण अफ्रीका के अख़बारों में छपा जिससे गोरे आगबबूला हो गए। उन्होंने ठान लिया कि गाँधी जी को दक्षिण अफ्रीका में नहीं घुसने दिया जाएगा और योजना बना ली कि उनको डरबन से वापस जाने को कहा जाएगा। गाँधी परिवार अन्य बहुत से भारतीयों के साथ जहाज़ पर चढ़ा तो इस बात से एकदम अनजान था। जब जहाज़ डरबन के बन्दरगाह पर पहुँचा तो अधिकारियों ने उन्हें जहाज़ से उतरने नहीं दिया। कारण यह बताया गया कि भारतीय यात्री भारत में प्लेग से संक्रमित हुए हैं।

यात्रियों को जहाज़ से बाहर आने देने की अनुमति मिलने से पहले जहाज़ 23 दिन तक बन्दरगाह के बाहर खड़ा रहा। तब उन्होंने देखा कि गुस्से से भरे गोरों की एक बड़ी भीड़ गाँधी जी के विरुद्ध नारे लगा रही थी। वे उन्हें जहाज़ से उतरने देना नहीं चाह रहे थे और भारत वापस जाओ के नारे लगा रहे थे।

क्या आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि बेचारी कस्तूरबा पर क्या बीत रही होगी? उन्हें पहली बार डर का अहसास हुआ, वह बच्चों और गाँधी जी के जीवन के बारे में चिन्तित थीं। आगे तो ख़ैर वह सारी उम्र इस भय के साथ जीने वाली थीं।

गाँधी जी का एक मित्र जहाज़ पर आया और समझाने लगा कि वे रात तक इन्तज़ार करें और रात के अँधेरे में जहाज़ से बाहर निकलें, लेकिन वह छिप कर बाहर नहीं आना चाहते थे। उन्होंने कस्तूरबा और बच्चों को अन्य लोगों के साथ अपने मित्र पारसी व्यापारी जीवाजी रुस्तम के घर भेज दिया और नाराज़ भीड़ की निगाहों के सामने शान्ति से जहाज़ से उतरे।

उनका विचार रुस्तम जी के घर जाने का था लेकिन वे तुरन्त भीड़ से घिर गए और उन्हें लात घूँसे पड़ने लगे। तब अगर पुलिस अधीक्षक की पत्नी जेन एलेक्ज़ेण्डर आकर उनको न बचातीं तो वे मर ही जाते। गाँधी जी अपने परिवार से जा मिले लेकिन उनकी परेशानियाँ कम नहीं हुईं।
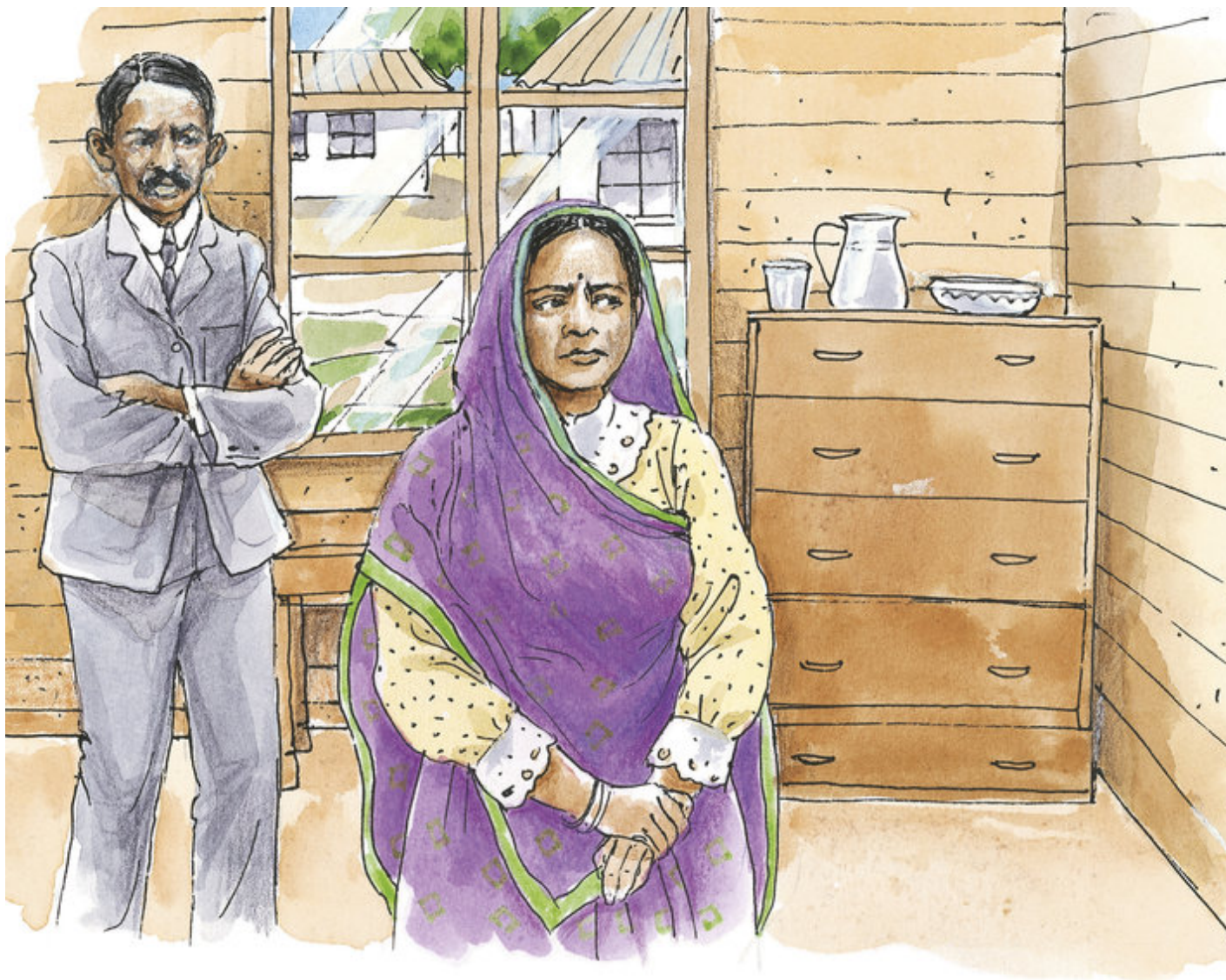
अब भीड़ उनके घर के पास जमा हो गई और उन्हें घर से बाहर निकलने पर मजबूर करने के लिए ताने देने लगी। तब पुलिस ने उनको सिपाही की वर्दी पहना कर चुपके से घर से बाहर निकाला। अतः जब गोरे ज़बरदस्ती अन्दर घुसे तो उनको केवल रुस्तम जी का परिवार, कस्तूरबा और बच्चे मिले।

और कस्तूरबा बड़ी घबराई हुई होंगी। यह उनके लिए दक्षिण अफ्रीका में बड़ा नाटकीय स्वागत रहा और उनकी जगह कोई और महिला होती तो तुरन्त अपने देश वापिस लौटना चाहती। लेकिन वह तो कस्तूरबा थीं!

उसके बाद हालात सुधरे। गाँधी जी एक सफल वकील बने और समुद्र के किनारे एक आलीशान मकान में रहने लगे। उन दिनों के परिवार के फ़ोटो में कस्तूरबा कशीदाकारीवाली मँहगी साड़ी पहने तथा बच्चे और गाँधी जी पश्चिमी पोषाक में नज़र आते हैं।

समस्या यह थी कि गाँधी जी अपने जीवन के साथ हमेशा प्रयोग करते रहते थे जिसके कारण अचानक उन्हें एक फ़ार्म पर रहने जाना पड़ा क्योंकि गाँधी जी बहुत साधारण ढंग से रहना चाहते थे! पहले वे डरबन के नज़दीक फ़ीनिक्स फ़ार्म में और उसके बाद जोहानसबर्ग के नज़दीक टॉलस्टाय फ़ार्म में रहे, और जल्दी ही बहुत से लोग उनके साथ आ गए।

यहाँ यह नियम बना कि फ़ार्म का सारा काम सदस्यों द्वारा किया जाएगा। इसलिए वे सब्ज़ियाँ उगाते, गायों का दूध दुहते, खाना पकाते, साफ़-सफ़ाई करते। गाँधी जी ने तो डबलरोटी बनाना, जैम बनाना, बढ़इगिरी और जूते गाँठना तक सीख लिया। यह पर्यावरण संरक्षण के लिए बहुत बढ़िया लेकिन बहुत मेहनत का काम था। उन्होंने बच्चों का स्कूल छुड़ा कर उन्हें खुद घर में पढ़ाना शुरू किया। इससे कस्तूरबा के दिल को बहुत ठेस पहुँची और उनके बड़े पुत्र हरिलाल उनके विरुद्ध हो गए क्योंकि उन्हें यह अप्रत्याशित बदलाव स्वीकार नहीं था। जल्द ही वह परिवार को छोड़कर वापिस भारत चले आए और उनकी गाँधी जी से कभी सुलह नहीं हो पाई।

बेचारी कस्तूरबा के लिए कभी-कभी यह सब बहुत पीड़ादायक होता था। जब गाँधी जी ने कहा कि सभी शौचालय साफ़ करेंगे तो वह बहुत गुस्सा हुईं। पति से उनका काफ़ी झगड़ा हुआ लेकिन अन्त में उन्होंने यह किया। इसके बाद से उनका जीवन लगातार कार्य करते और लोगों की देखभाल में बीता और यह सिलसिला भारत आने पर अहमदाबाद में साबरमती की स्थापना के बाद भी जारी रहा। वह इतनी सादगी से जीतीं कि उनका सफ़री बैग गाँधी जी से भी छोटा रहता था। वह सही मायनों में सत्याग्रही बन चुकी थीं।

यह वह दौर था जब गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के हक के लिए लड़ाई लड़ रहे थे और उन्होंने नेटाल भारतीय कांग्रेस पार्टी की स्थापना की। उन्होंने विरोध में जुलूस निकाले और उनके साथ और लोग भी गिरफ्तार करके जेल में डाले गए।

जेल में उन्हें भूखा रखा गया, कोड़े मारे गए और गाँधी जी को अँधेरी कोठरी में अकेला रखा गया। भारत और ब्रिटेन के अख़बारों में जब इसकी आलोचना हुई तो आन्दोलनकारियों को रिहा कर दिया गया।
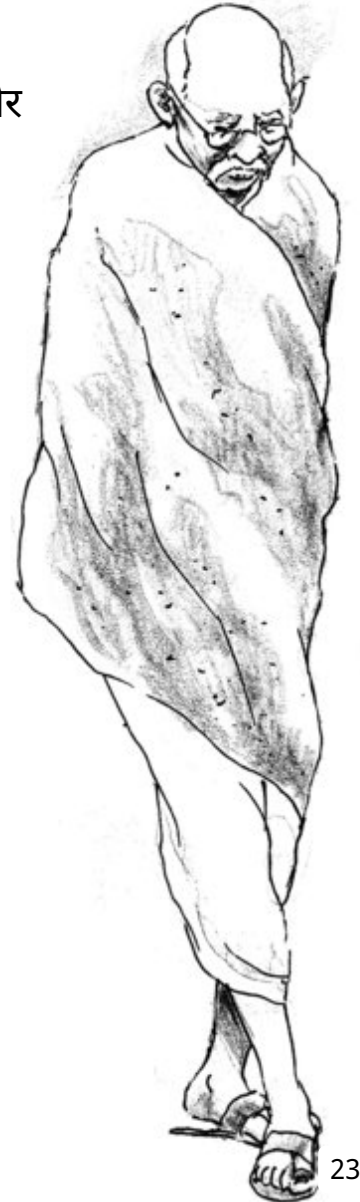
इस बीच कस्तूरबा ने फ़ार्म की ज़िम्मेदारी सम्भाली। उनके अब चार बेटे थे - हरिलाल, मणिलाल, रामदास और देवदास। अगला आन्दोलन उस नए कानून के विरुद्ध था जिसमें केवल ईसाई ढंग से हुई शादियों को वैध ठहराया गया था। कस्तूरबा गुस्से से भरी थीं, वह मानती थीं कि उनकी शादी एकदम सही धार्मिक रीति-रिवाज़ के अनुसार हुई है, उसे ग़ैरकानूनी बताने वाले यह गोरे कौन होते हैं? अब कस्तूरबा और उनकी महिला मित्र इसके विरुद्ध जुलूस निकालेंगी!

अबकी बार बड़ा सत्याग्रह हो रहा था जिसमें हज़ारों की संख्या में स्त्री-पुरुषों ने आन्दोलन में हिस्सा लेकर पुलिस का सामना किया, लाठियाँ खाईं और कुछ लोगों की मृत्यु भी हो गई। कस्तूरबा महिलाओं का नेतृत्व करती ट्रान्सवाल प्रान्त में घुसीं। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में अपराधी लोगों के साथ तीन महीने एक गन्दी कोठरी में रखा गया। रिहा होने के बाद वह बहुत बीमार पड़ीं। अन्त में केवल ईसाई ढंग से हुई शादी को वैध मानने वाला नियम हटा दिया गया।

अब तक कस्तूरबा स्वतंत्रता सेनानी बन चुकी थी। सन् 1915 में गाँधी परिवार वापस भारत आ गया। अब उन्हें और भी विकट समस्याओं का सामना करना था, और भी कठिन चुनौतियाँ सामने आने वाली थी।

गाँधी फ़ैशन

गाँधी जी अपनी जीवन शैली में लगातार प्रयोग करते रहे जिसमें उनके पहनने वाले कपड़ों में भी बदलाव शामिल था। अगर आप उनके चित्रों पर ग़ौर करें तो गाँधी जी के परिवार के पहनावे में कई तरह के बदलाव पाएँगे। लन्दन में गाँधी जी सूट , शानदार गलाबन्द और हैट पहनते। जब वे भारत लौटे तो कस्तूरबा और बच्चों से दूर तक टहलने और नाश्ते में कोको और जई के आटे का दलिया खाने, मोज़े और जूता पहनने का आग्रह करते थे। कुछ समय बाद सभी ने मोज़े पहनने को मना कर दिया क्योंकि उन से पैरों में बदबू आती थी!

दक्षिण अफ्रीका में, शुरू में उन्होंने पश्चिमी पोषाक पहनी और कस्तूरबा ने पारसी ढंग की साड़ियाँ। और जब वे भारत वापस लौट रहे थे, तब उन्होंने भारतीय किसान की तरह धोती, कुर्ता और सिर पर एक बड़ी सी पगड़ी पहनना तय किया और कस्तूरबा साधारण सी सूती साड़ी पहनने लगीं।

यह उनके जैसी सुन्दर महिला के लिए, जो अच्छे कपड़े और आभूषण पहनती हो, आसान नहीं था और शायद इसीलिए वे चित्रों में मुस्कराती हुई कम ही दिखती हैं!

घर वापसी

आख़िर कस्तूरबा घर आ गईं लेकिन वे जानती थी कि गाँधी जी भारत के स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ने के लिए भारत वापस आए हैं। इसलिए वह और अधिक कठिनाइयाँ झेलने के लिए तैयार थीं। अब तक दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी की उपलब्धियों की ख़बर भारत पहुँच चुकी थी और बम्बई (अब मुंबई) के बन्दरगाह पर उनका एक नायक की तरह स्वागत किया गया। उनको मालाएँ पहनाई गईं, एक जुलूस के साथ उन्हें बाहर लाया गया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने उनके सम्मान में एक बड़ा स्वागत समारोह किया। स्वागत समारोह में बम्बई के उच्च वर्ग के बीच जहाँ महिलाएँ रेशमी साड़ियों और आभूषणों से सजी थीं, कस्तूरबा साधारण सूती साड़ी में शालीनता से अपने पति के पीछे खड़ी थीं। जो आगे होने जा रहा है वह देखने का इन्तज़ार करती मालूम देती थीं।

गाँधी जी लगभग 20 वर्ष भारत से दूर रहे थे, कांग्रेसी नेता गोपाल कृष्ण गोखले ने सुझाव दिया कि वे पहले अपने देश के बारे में जानें। इसलिए उन्होंने देश को जानने के लिए रेल से लम्बी यात्राएँ कीं और कस्तूरबा भी उनके साथ गईं। उन्होंने गन्दे और भीड़ से भरे तीसरे दर्जे के डिब्बों में सफ़र किया। यह कस्तूरबा के लिए बड़ा कष्टप्रद था लेकिन वह यह देखकर हैरान रह गईं कि गरीब लोगों ने उनका हर जगह बड़े प्रेम और आदर से स्वागत किया। यह सरल लोग बस यह जानते थे कि यह एक नेता है जो उनकी बात सुनने के लिए, उनके हित के लिए लड़ने के लिए तैयार है और उनके साथ है। गाँधी जी महात्मा गाँधी बन रहे थे। अब वह जन-जन के लिए उनके प्रिय ‘बापू’ थे और कस्तूरबा ‘बा’।

रेलवे स्टेशन पर सैकड़ों लोग उनका इन्तज़ार करते, उनका डिब्बा फूलों और फलों से भर देते। शान्तिनिकेतन में कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उनका संगीत और नृत्य के साथ स्वागत किया

और वहाँ आमों के बागों और बगीचों के बीच रहना और पेड़ों के नीचे कक्षाओं का लगना कस्तूरबा को पसन्द आया। इसने उन के लिए टॉलस्टाय फार्म की याद ताज़ा कर दी।

अब गाँधी जी ने अहमदाबाद के नज़दीक साबरमती आश्रम शुरू कर दिया और कस्तूरबा को घर मिल गया। बहुत से लोग आश्रम में शामिल हो गए जहाँ एक अपना स्कूल और वाचनालय था। वे अपने फल और सब्ज़ियाँ ख़ुद उगाते, वहाँ गाय का बाड़ा था, वे चरखे से सूत कातते थे और बुनकर उससे साड़ियाँ और धोतियाँ बनाते।

कस्तूरबा और अन्य महिलाएँ रसोई सम्हालती थीं। गाँधी जी अक्सर बाहर रहते थे और साबरमती आश्रम वह जगह बन गई जहाँ वह स्वतन्त्रता संघर्ष के काम से थक जाने पर आराम करते। वहाँ उनका ख़याल रखने और उनका उत्साह जगाने के लिए कस्तूरबा थीं।

अमरीकी पत्रकार लुई फ़िशर जिन्होंने गाँधी जी की बेहतरीन जीवनी लिखी है, कस्तूरबा को साबरमती में काफ़ी ग़ौर से देखने के बाद लिखा, "खाना खाते और प्रार्थना करते हुए वह उनके ज़रा पीछे बैठी, उनका ध्यान रखते हुए पंखा झलती थीं। वह हमेशा उनको निहारतीं, वह कभी-कभार उनको देख लेते थे, लेकिन वे उनको अपने सबसे नज़दीक चाहते थे और उनके बीच पूरा तालमेल था।"

वह उनके बहुत से नियमों की अनदेखी करती थीं। जब गाँधी जी आश्रम के बच्चों को कम मसाले में पका हुए एकदम अरूचिपूर्ण शाकाहारी भोजन पर रखना चाहते तो वह अक्सर उन्हें मिठाई दे देतीं। गाँधी जी के दवाओं को लेकर बड़े अनूठे सिद्धान्त थे। एक बार जब उनके चार साल के पोते अरुण को बुखार आया तो उन्होंने उसे सात दिन कुछ न खिलाने का आदेश सुनाया। जल्दी ही बुखार ठीक हो गया और बच्चा खाने के लिए रोने लगा। कस्तूरबा ने कोप से अपने पति की ओर देखा और मज़बूती से कहा," मैं बच्चे को भूखा नहीं मरने दूँगी!" और उन्होंने तुरन्त कुछ संतरों का रस बीमार बच्चे को पिला दिया।

वर्षों बाद, जब उन्होंने ख़ुद विरोध आन्दोलनों की अगुवाई की और जेल गईं, तो वे काफ़ी स्वावलम्बी हो गईं। एक बार जब वे बहुत बीमार हो गईं तो ट्रेन से अपनी डॉक्टर सुशीला नायर से मिलने गईं। कस्तूरबा को अकेले यात्रा करते पाकर सुशीलाजी को बहुत झटका लगा। जब उन्होंने इस बारे में नाराज़गी प्रकट की तो कस्तूरबा ने हँसकर कहा," इस में परेशानी क्या है? उन्होंने यात्रियों की निगरानी में मुझे ट्रेन में बैठा दिया और यहाँ पर तुम मुझे लेने आ गईं।"

गोरे मालिकों द्वारा शोषित नील के किसानों की सहायता के लिए सत्याग्रह करने गाँधी जी कस्तूरबा के साथ बिहार में चम्पारण गए जहाँ वह गाँव-गाँव जाकर किसानों से जानकारी लेते और कभी-कभी उनका जीवन खतरे में होता। गाँवों की गरीबी देखकर कस्तूरबा भौंचक्की रह गईं। वह एक व्यवहारिक महिला थीं। जब वह गाँव की महिलाओं से बातें करतीं तब वह उन्हें साफ़-सफ़ाई, अच्छे पौष्टिक आहार और बच्चों को पढ़ाने की ज़रूरत के बारे में समझातीं।

कस्तूरबा हिन्दू रीति-रिवाज़ों में विश्वास रखने वाली परम्परावादी महिला थीं और इसलिए जातिप्रथा को मानती थीं। उधर गाँधी जी जातिवाद और अस्पृश्यता के प्रचलन के खिलाफ लड़ रहे थे जिसे वे मानवता के विरुद्ध मानते थे। जब उन्होंने एक हरिजन व्यक्ति दूदाभाई, उनकी पत्नी दानी बहन और बेटी लक्ष्मी को साबरमती में रहने के लिए आमन्त्रित किया तो कस्तूरबा ने दानी बहन को आश्रम के रसोई कक्ष में आने से मना कर दिया। गाँधी जी के भतीजे मगनलाल सहित आश्रम के कई लोग आश्रम छोड़कर चले गए। कस्तूरबा को जातिवाद और अस्पृश्यता के प्रचलन की गलती समझा पाने में गाँधी जी को समय लगा लेकिन जब उन्होंने लक्ष्मी को गोद लेने की बात कही तो वह शीघ्र मान गईं।

कस्तूरबा का परिवार

गाँधी जी एक बहुत कठोर पिता थे, अपने बेटों के प्रति वह बहुत सख़्त थे। वह अपने बच्चों को घर पर पढ़ाने पर ज़ोर देते थे और उनको बहुत साधारण, अनुशासित जीवन जीने को कहते थे। उनका बड़ा बेटा हरिलाल उनके इन नियमों को स्वीकार नहीं कर पाया और परिवार से दूर होता चला गया। इससे बेचारी कस्तूरबा का दिल बहुत दुखा।

हरिलाल का जीवन बहुत कष्ट भरा रहा, वह अपने पिता की लोगों के सामने आलोचना करता था और वह उसको परिवार में वापिस लाने में असफल रहीं। हरिलाल की पत्नी का देहान्त हुआ तो कस्तूरबा उसके चारों बच्चों को साबरमती में ले आईं और उनको पाला-पोसा। गाँधी जी की इच्छा का मान रखते हुए भारत के स्वतन्त्र होने के बाद उनका कोई पुत्र राजनीति से नहीं जुड़ा।

1930 के जाड़ों में गाँधी जी और उनके अनुयायी नमक कानून के खिलाफ दांडी कूच के लिए तैयारी करने लगे। नमक कानून के अनुसार किसी भी भारतीय को नमक बनाने और बेचने की अनुमति नहीं थी और गरीब से गरीब भारतीय को भी नमक कर देना पड़ता था। दांडी कूच की योजना बहुत होशियारी भरी थी-आन्दोलनकारी साबरमती से दांडी समुद्र तट तक पैदल जाएँगे और वहाँ समुद्र के किनारे जमा नमक उठाकर इसे बेचेंगे।

गाँधी जी और उनके 78 युवा साथियों ने रास्ते के गाँवों में रुकते हुए 25 दिन पदयात्रा की। फिर देश के कोने-कोने से लोगों ने नमक बना और बेचकर नमक कानून तोड़ा। हज़ारों लोग पकड़े गए, बाज़ार, अदालतें, स्कूल, कॉलेज और कार्यालय बन्द हो गए और पूरा देश जैसे ठप्प हो गया। यह सही मायनों में सत्याग्रह था - एकदम शान्त, अहिंसापूर्ण आन्दोलन और ब्रिटिश सरकार को अपनी बात सुनने के लिए बाध्य करने का बहुत होशियारी भरा तरीका।

कूच में शामिल होना जोखिम भरा था। आन्दोलनकारी पिट सकते थे। उनको गोली मारी जा सकती थी या उन्हें गिरफ्तार किया जा सकता था। इसलिए 12 मार्च की सुबह जब आन्दोलनकारी साबरमती से पदयात्रा शुरू करने की तैयारी में थे, उन्होंने पाया कि कस्तूरबा ने उनका साथ देना तय कर लिया है। जैसे ही गाँधी जी कस्तूरबा को वापिस जाने के लिए कहने लगे वैसे ही पदयात्रा रुक गई। कस्तूरबा के लिए उनका स्थान हमेशा अपने पति के साथ था और 60 साल की उम्र में भी वह हफ्तों देहात के कच्चे रास्तों पर चलने और पुलिस के डण्डों का सामना करने से डरी नहीं। कूच के बाद, गाँधी जी जेल भेजे गए और वह विरोध आन्दोलन में घायल हुए लोगों की देखभाल करने अस्पतालों में जाने लगीं।

1942 में कांग्रेस पार्टी ने एक प्रस्ताव पास किया जिसमें अंग्रेज़ों से भारत छोड़ने का अनुरोध किया गया था। उसी रात सारे कांग्रेसी नेताओं को पकड़ कर जेल भेज दिया गया। गाँधी जी को पुणे के पास आग़ा ख़ाँ महल में ले जाया गया और कस्तूरबा ने सरकार से आग्रह किया कि उन्हें उनके साथ रहने की अनुमति दी जाए। सरकार ने अनुमति नहीं दी तो उन्होंने एक जनसमूह को सम्बोधित करने और कूच का नेतृत्व करने की चेतावनी दी, तब जाकर उन्हें गाँधी जी के साथ रहने की अनुमति दी गई।

कस्तूरबा और गाँधी जी ने दो साल की लम्बी कैद इकट्ठे काटी। उनके साथ गाँधी जी के सचिव महादेव देसाई, सरोजिनी नायडू और मीरा बहन जैसे और नेता भी थे। कस्तूरबा को अपने परिवार से अलग होना बड़ा कष्टदायी लगा, ख़ासतौर पर अपने पोती-पोतों से अलग रहना उन्हें हर समय अखरता। वह चाहती थीं कि गाँधी जी इस मामले में कुछ करें, और एक बार उन्होंने उनसे कहा, ”आप ब्रिटिश लोगों को भारत छोड़ने के लिए क्यों कहते हैं? हमारा देश बहुत बड़ा है, हम सभी इसमें रह सकते हैं। अगर वे चाहें तो उनको रहने दें, लेकिन उनसे कह दें कि वे हमारे भाइयों की तरह रहें।”

उनकी बात सुनकर गाँधी जी को बड़ा मज़ा आया
और उन्होंने कहा कि मुझे अंग्रज़ों के एक स्वतन्त्र देश के
नागरिकों की तरह भारत में रहने से कोई समस्या नहीं है।

पति-पत्नी बगीचे में लम्बी सैर करते
और दोनों ही काफ़ी बूढ़े हो चले थे
लेकिन गाँधी जी अब भी कस्तूरबा को पढ़ाने
की कोशिश करते। वह उन्हें भूगोल के पाठ पढ़ाते,
देशों की राजधानियों के नाम याद कराते
और वह सब गड्डमड्ड कर देतीं!

आग़ा ख़ाँ महल में बीता समय गाँधी जी के लिए बहुत ही त्रासदी भरा था। पहले उनके पुराने मित्र और सहयोगी महादेव देसाई का देहान्त हो गया और फिर 1944 में कस्तूरबा को फेफड़े की गम्भीर बीमारी हो गई। कई तरह के उपचार किए गए लेकिन सब बेकार। आख़िर उनके बेटों को उनसे मिलने की अनुमति दे दी गई। गाँधी जी उनके साथ बने रहते, उनकी देखभाल और प्रार्थना करते। 22 फरवरी 1944 को, गाँधी जी की गोद में सिर धरे कस्तूरबा गाँधी का देहान्त हो गया। उनकी इच्छा के अनुसार उनका दाह संस्कार गाँधी जी द्वारा काते हुए सूत से बुनी साड़ी में किया गया। उनकी मृत्यु के दुख से उबरने में गाँधी जी को काफ़ी समय लगा। उन्होंने 62 वर्ष एक-दूसरे के साथ बिताये थे। मीरा बेन ने एक पत्र में लिखा, “ऐसा लगता है कि बा के साथ बापू का एक अंग चला गया।” कस्तूरबा ने बहुत बलिदान किए और लड़ाई लड़ी और त्रासदी यह कि वह भारत को स्वतन्त्र देखने के लिए ज़िन्दा नहीं रहीं।

आग़ा ख़ाँ महल के परिसर में हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के दो शहीदों के स्मारक हैं। उन दो लोगों के जो महात्मा गाँधी के सबसे प्रिय थे : महादेव देसाई और कस्तूरबा गाँधी।
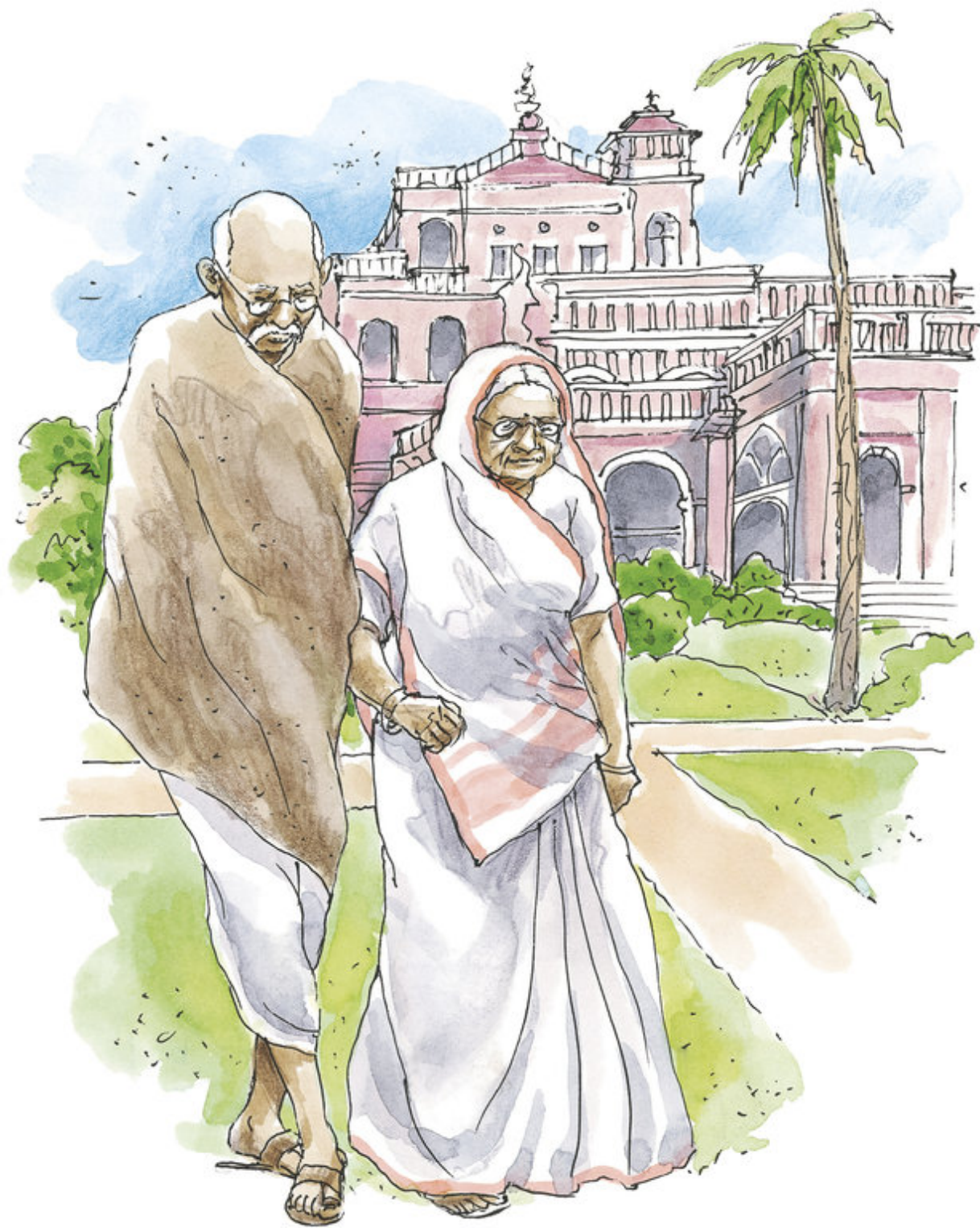
Story Attribution:

This story: हम उन्हें बा कहते हैं is translated by Madhu B. Joshi . The © for this translation lies with Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'We call her Ba - A Biography of Kasturba Gandhi', by Subhadra Sen Gupta . © Pratham Books , 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Hum Unhein Ba Kehte Hain – Kasturba Gandhi Ki Jeevani' has been published by Pratham Books. The development of this book has been supported by Parag (Promoting Innovative Publishing in Education), an initiative of Tata Trusts. www.prathambooks.org.

Images Attributions:

Cover page: Kasturba Gandhi, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: A coconut tree, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Kasturba Gandhi in a sari, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: A woman scolding a man in front of children, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Child marriage, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: A child groom sitting in a corner, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Food in plate and bowls, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Tea cups and a kettle, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Five people in an alley, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: A man standing with folded arms, by Neeta Gangopadhya © Pratham Books, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

The development of this book has been supported by Parag (Promoting Innovative Publishing in Education), an initiative of Tata Trusts.

Images Attributions:

The development of this book has been supported by Parag (Promoting Innovative Publishing in Education), an initiative of Tata Trusts.

हम उन्हें बा कहते हैं

(Hindi)

कस्तूरबा कोई साधारण महिला नहीं थीं। उनमें साहस कूट-कूट कर भरा हुआ था, उनकी अपनी विशेष पहचान थी और उनके दृढ़ संकल्प के आगे किसी की नहीं चलती थी। उन्होंने देश के लिए बहुत कुछ किया था। वे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की विश्वासपात्र मित्र व संगिनी थीं। बापू की जीवनी लिखने वाले लुई फ़िशर ने बा के विषय में लिखा है, "स्वयं की पहचान बनाये रखते हुए महात्मा गाँधी की छाया बन जाना उन्हें एक उल्लेखनीय महिला बना देता है।" इस अद्भुत महिला के बारे में पढ़िए जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे कठिन समय में दुनिया के प्रमुख नेताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.